Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/234
Peer Reviewed & Refereed Journal, MAY-JUNE 2024, Vol- 13/83

वर्तमान विद्यालयी शिक्षण प्रक्रिया में सृजनात्मक शिक्षण की आवश्यकता एवं चुनौतियाँ

योगेश कुमार सिंह

शोध छात्र (शिक्षाशास्त्र) हंडिया पी.जी. कॉलेज, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर 222003 Email- yks2214@rediffmail.com

डॉ. विरेन्द्र कुमार

सहायक प्रोफेसर, (शिक्षा विभाग), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, म,प्र, 484887 Email- airvirendra@gmail.com

Paper Received On: 20 May 2024

Peer Reviewed On: 24 June 2024

Published On: 01 July 2024

Abstract

किसी देश का विकास वहाँ के लोगों की कार्य कुशलता, जीवन–यापन व शैक्षिक स्तर से पता चलता हैं। शिक्षा ही व्यक्ति को कुशल बनाती है। शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। अतः किसी समाज एवं देश की आव यकता के अनुरूप शिक्षा का संचालन किया जाता है। समाज एवं देश की आवश्यकता को मद्देनजर रखते हुए शिक्षा की अवधारणा, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा की पाठ्यचर्या, पाठ्यचर्या को प्रस्तुत करने के लिए शिक्षण विधियाँ, विद्यालय का वातावरण, शिक्षक, शिक्षार्थी, अनुसा न इत्यादि निर्धारित किया जाता है। शिक्षा में दो लोगों का होना अति–आवश्यक हैः इनमें प्रथम शिक्षक एवं दूसरा शिक्षार्थी और इन दोनों के मध्य किसी उद्देश्य को लेकर अन्तःक्रिया होती है। अन्तःक्रिया के लिए शिक्षण प्रक्रिया को रूचिकर बनाने की आवश्यकता है। शिक्षण को रूचिकर बनाने के लिए शिक्षक को सृजनात्मक शिक्षण कराने की आवश्यकता होती है। शिक्षण को सृजनात्मक बनाना शिक्षक के लिए कोई आसान कार्य नहीं है बल्कि यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। यही शिक्षण प्रक्रिया को आगे बढ़ाती है। शिक्षण प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए कक्षा–कक्ष के वातावरण को रूचिकर बनाना होता है। क्योंकि जब विषयवस्तु रूचिकर नहीं होगा तो वह निरश हो जायेगा जिससे सीखने वाला अपने गति से सीख नहीं पायेगा और विषय वस्तु से संबंध स्थापित नही कर पायेगा। अतः शिक्षण को रूचिकर बनाने के लिए शिक्षण प्रक्रिया को सृजनात्मक होना चाहिए। इसलिए वर्तमान विद्यालयीय शिक्षण प्रक्रिया को सृजनात्मक शिक्षण की आवश्यकता है तो सृजनात्मक शिक्षण में चुनौतियाँ भी हैं।

शब्द कुंजी : *शिक्षण प्रक्रिया, सृजनात्मक शिक्षण की आवश्यकता एवं चुनौतियाँ।*

उपनिषद में कहा गया है कि ''सा विद्या या विमुक्ते'' अर्थात् शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाए। मानव समाज के विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है और आगे भी रहेगी क्योंकि शिक्षा जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास सम्भव हो पाता है। प्राचीन काल में हमारे देश में शिक्षा की कोई औपचारिक व्यवस्था नहीं थी। यह व्यक्तिगत एवं निजी प्रयासों द्वारा संचालित होती थी। मध्यकाल में भी शिक्षा के लिए राज्य उत्तरदायी नहीं था तथा शिक्षा कुछ वर्गों तक

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ही सीमित थी। आधुनिक काल में ब्रिटिश शासन द्वारा शिक्षा को औपचारिक एवं राज्य के नियंत्रण में लाने का प्रयास किया गया। भारत जैसे विशाल देश के लिए ब्रिटिश शासन का यह प्रयास पर्याप्त नहीं था।

स्वतंत्रता उपरान्त देश में औपचारिक शिक्षा के लिए कई आयोग, समितियाँ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा समय–समय पर प्रस्तुत की गयी। औपचारिक शिक्षा की बात की जाय तो इसमें देश की माँग, जरूरत, आवश्कता को ध्यान में रखकर इन आयोगों, समीतियों एवं शिक्षा नीतियों ने समय–समय पर सुझाव दिये की आज की क्या जरूरत है? साथ ही शिक्षा को एक अधिकार के रूप में अपनाया गया जो एक मौलिक अधिकार के रूप में सवंधिान में वर्णित किया जा चुका है। औपचारिक शिक्षा की शुरूआत विद्यालयी शिक्षा से प्रारम्भ होती है। विद्यालयी शिक्षा एक ऐसा आधार है जिसमें बालक अपने परिवार एवं आस–पास सीखे गये क्रिया व व्यवहार को विद्यालय में प्रवेश के साथ ही उसमें सं ाोधन एवं परिमार्जन करता है। विद्यार्थी के व्यवहार संशोधन एवं परिमार्जन में मुख्य भूमिका शिक्षक की होती है। किलपैट्रिक ने कहा है कि '' पशु प्रशिक्षित किए जाते जबकि मनुष्य शिक्षित किए जाते हैं।'' शिक्षक यह काम शैक्षिक प्रक्रिया के दौरान ही शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थी के व्यवहार एवं क्रिया में संशोधन एवं परिमार्जन करता है।

शिक्षण – गेज के अनुसार ''शिक्षण एक प्रकार का पारस्परिक प्रभाव है जिसका उद्देश्य है दूसरे व्यक्ति के व्यावहारों में वांछित परिवर्तन लाना।'' शिक्षण शिक्षा प्रक्रिया को संचालित करने एवं शिक्षक एवं शिक्षार्थी मध्य अन्तःक्रिया स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बच्चे जब विद्यार्थी जीवन में प्रवेश से पहले अपने परिवार में रहते हुए स्वतंत्रता एवं नियंत्रण के माध्यम से चलना, बोलना, खेलना, खाना इत्यादि क्रिया एवं व्यवहार सीखते हैं, लेकिन जैसे ही वे विद्यालय में प्रवेश करते है तब उनको एक अलग ही वातावरण मिलता है जो उनके घर और परिवार से बिल्कुल अलग होता है। इस परिवर्तन को धीरे–धीरे स्वीकार करते हैं। लेकिन इस स्वीकृति में दो विरोधी अर्न्तद्वन्द्व होता है पहला तो वह सामान्य समझकर दूसरा भय के कारण स्वीकृति देता है, इस स्वीकृति में विद्यालय एवं विद्यालय में उपस्थित लोग जो पहले से ही तैयार रहते है कि आने वाले बच्चों का स्वागत किस प्रकार से करेंगे। इस स्वागत में बच्चे जो अभी–अभी विद्यार्थी बने हैं उनके मनोभावों के कितने अनुकूल एवं प्रतिकूल माहौल मिलेंगे। विद्यार्थी को जैसा माहौल मिलता वैसा ही उसके शैक्षिक जीवन में आगे अनुभव के रूप में उपयोग करता है।

प्रतिकूल वातावरण– प्रतिकूल वातावरण के लिए विद्यालय में सबसे बड़ी भूमिका उसके कक्षा–कक्ष का वातावरण है। कक्षा–कक्ष का वातावरण विद्यार्थी को अनुकूल बनाने में शिक्षक की भूमिका सबसे अहम होती है। शिक्षक ही विद्यार्थी के मनोभावों को समझ सकता है व उसके आवश्यकता के अनुसार वातावरण निर्मित कर सकता है। शिक्षक ही विद्यार्थी की रूचि, क्षमता, क्रिया का ध्यान रखता है वह विद्यालय को अपने घर के रूप में प्राप्त करता है। यह बात मैं अपने अनुसार नही बल्कि कई शिक्षक

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

हुए है जो विद्यार्थी के लिए उस भूमिका में रहे हैं, जैसे : कमेनियस, फ्राबेल, ड्यूवी, मांटेसरी, गिज्जू भाई बधेका इत्यादि। गिज्जू भाई बधेका पर प्रकाशित पुस्तक दिवा स्वप्न में लिखा भी गया है कि इनको विद्यार्थी मूछों वाली माँ भी कहते थे।

इस बात से यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थी के मन मस्तिष्क में माता–पिता के बाद शिक्षक का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। इसके लिए शिक्षक को शिक्षण हेतु बालक की रूचि और अभिप्रेरणा का उपयोग करना चाहिए। शिक्षण को रूचिकर बनाया जाय, शिक्षण को विद्यार्थी के यथार्थ जीवन से जोड़ा जाय, विद्यार्थी की सहभागी बानाया जाय, विद्यार्थियों के लिए सृजनात्मक क्रिया–कलाप कराये जाय जो उनमें नई जिज्ञाशा का संचार करे और वे अपने प्रश्नों के उत्तर के पास पहुँचने का प्रयास कर सके, जिससे उनका आत्मबल बढ सके। अतः शिक्षक को कक्षा–कक्ष को रूचिकर बनाने के लिए सृजनात्मक शिक्षण पर बल देना चाहिए।

अधिकतर सूनने में आता है कि विद्यार्थियों का पढ़ने में मन नही लगता। यह भी समाचारों में देखने एवं सूनने को मिलता है कि कक्षा–कक्ष की वजह से विद्यार्थी आत्महत्या तक कर रहे हैं। यह भी देखने सूनने में मिलता है कि विद्यार्थी अपने माता–पिता या परिवार के अन्य सदस्यों की बातें आसानी से समझ लेते हैं, लेकिन विद्यालय में प्रशिक्षित शिक्षक विद्यार्थी को उसी तरह, उसी अंदाज एवं उसी सहजता से नही बता पाते और विद्यार्थी घर पर आते ही अपने परिवार के सदस्यों से कहते है कि वह शिक्षक आपके जैसा नही बताते। अतः विद्यार्थी को क्या चाहिए शिक्षक उसके अधिकार क्षेत्र एवं क्षमता को समझे, उसके अनुकूलन की आवश्यकता को समझें। इसीलिए शिक्षण प्रशिक्षण के दौरान शिक्षक का शिक्षण–मनोविज्ञान ज्ञान एवं शिक्षण का व्यवहारिक वातावरण में प्रशिक्षण कराया जाता है। जिससे वे कक्षा–कक्ष को रोचक और अपने शिक्षण को सृजनात्मक बना सकें।

ऐसा नहीं है कि यह सिर्फ मौखिक बातें है बल्कि जैसे – जैसे शिक्षण – मनोविज्ञान का प्रभाव बढ़ा वैसे ही शिक्षा के प्रति मनोवैज्ञानिकों का नजरिया भी बदला है। पहले शिक्षा की दिशा शिक्षक केन्द्रित होती थी, पाठ्यचर्या केन्द्रित एवं शिक्षक केन्द्रित थी, शिक्षण विधियाँ शिक्षक केन्द्रित थी वे आज वर्तमान में विद्यार्थी केन्द्रित हो चुकी हैं। हमारे देश में कई आयोग भी बनाया गया विद्यार्थियों की जरूरत के अनुसार शिक्षा, उद्देश्य, पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियों का निर्माण करें। यहाँ तक की शिक्षण प्रशिक्षण में भी परिवर्तन एवं वर्तमान आवश्यकता एवं माँग के अनुसार शिक्षकों को तैयार किया जाय। शिक्षकों को अधिक से अधिक सृजनात्मक विधियों का उपयोग करना आना चाहिए क्योंकि यदि प्रारम्भ से ही विद्यार्थियों को कक्षा–कक्ष से जोड़ा जाय तो वो आगे चल कर अपने अध्ययन अध्यापन में से विमुख नही होगें।

वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 का मकसद है कि शिक्षा को इस प्रकार कक्षा–कक्ष में प्रस्तुत किया जाय विद्यार्थी अपने पूर्व ज्ञान, क्षमता एवं कौशल का उपयोग नवीन ज्ञान को प्राप्त करने में उपयोग कर सकें। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि ''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

है।'' अतः विवेकानन्द जी बालक को जन्म से पूर्ण मानते थे और शिक्षा के द्वारा उसे अपनी इस पूर्णता की अनुभूति करने योग्य बनाने पर बल देना चाहते थे। यह तभी संभव है जब शिक्षक अपनी भूमिका, जिम्मेदारी और जवाबदेही के साथ काम करें। सृजनात्मक शिक्षण से सिर्फ शिक्षक को ही शिक्षण में सहायता नहीं मिलेगी यद्दपि विद्यार्थियों का भी बेहतर अधिगम होगा, बेहतर सामाजीकरण होगा, किसी काम को करने में ज्यादा कुशल होगें, उनमें भाषा विकास, संख्यात्मक विकास, नैतिकता का विकास, भाारीरिक विकास, संवेगात्मक विकास में भी बेहतर परिणाम देखने को मिलेगा।

शिक्षण की प्रक्रिया : शिक्षण मूल रूप से एक प्रक्रिया है, जिसमें योजना, कार्यान्वयन, मूल्यांकन और पुनरीक्षण भाामिल है। शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें सीखने वाला स्वयं को विभिन्न तरीकों से अपने क्षमतानुसार भौक्षिक वातावरण के साथ अनुकूलन और समायोजन स्थापित करता है। जिसमें उसकी क्षमताओं का विकास होता है और अपने पर्यावरण को नियंत्रित करने और अपनी संभावनाओं को पूरा करने में सक्षम बनता है।

शिक्षण की प्रक्रिया मुख्यतः तीन अवस्थाओं में संपन्न में होती है। 1. पूर्व–क्रिया या योजना अवस्था 2. अन्तःक्रिया या निष्पादन/क्रियान्वयन अवस्था एवं 3. उत्तर क्रिया या मूल्यांकन से प्रतिक्रिया अवस्था में संपन्न होती है। जिसमें सिखाने वाला सीखने वाले के लिए उसकी क्षमता के अनुसार रणनीति बनाता है, उसका क्रियान्वयन करता है और अन्त में निर्धारित किये गये लक्ष्य प्राप्ति की जाँच करता है एवं आगे के लिए पुनः शिक्षण योजना का निर्माण करता है यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है।

शिक्षण की प्रकृति : शिक्षण अंतःक्रियात्मक है, एक सोद्देश्य प्रक्रिया है, विकासात्मक प्रक्रिया है, आमने–सामने होने वाली प्रक्रिया है, मानव प्रकृति पर आधारित होती है, भाषा सम्प्रेषण का कार्य करती है, एक उपचारात्मक प्रक्रिया है एंव यह औपचारिक तथा अनौपचारिक प्रक्रिया है।

सृजनात्मक शिक्षण की आव यकता : वर्तमान विद्यालयी शिक्षा में शिक्षकों को सृजनात्मक शिक्षण की आवश्यकता पर बल दिया जा रहा है। आज तकनीकी ने शिक्षा के क्षेत्र में भी क्रांति ला दिया है, प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है। सृजनात्मक शिक्षण के लिए जैसे : **चित्र, श्यामपट्ट पर कलाकृतियों का निर्माण, हस्तलेखन में सुलेख, गणित को खेल के माध्यम से सिखाना, विज्ञान का अनुभव कराना, प्रकृति से जोड़ना, संगीत का उपयोग, नृत्य का उपयोग, भौक्षिक तकनीकी का उपयोग (प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर, स्लाइड डिस्प्ले) रंगीन चॉक का उपयोग, दैनिक जीवन में जो वस्तुएं उपयोगी नहीं है उसका उपयोग करवाना, सामाजिक खेल के माध्यम से सामाजिक कौ ालों का विकास करना इत्यादि का प्रयोग किया जा सकता है। शिक्षक स्वयं और अपने विद्यार्थियों को जीवन के तौर तरीके सीखा सकता है और मितव्ययी बना सकता है।** जिससे शिक्षक अपने आपको पेशेवर की तरह जैसे डॉक्टर एवं इंजीनियर प्रस्तुत करते है वैसे ही शिक्षक खुद को प्रस्तुत करने में सफल हो रहा है। सृजनात्मक शिक्षण से शिक्षक और शिक्षार्थी को निम्नलिखित लाभ मिल सकता है :

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

- बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए।
- शिक्षक में आत्मविश्वास विकसित करने के लिए।
- शिक्षक में आत्मसम्मान का भाव विकसित करने के लिए।
- उन्नत सामाजिक कौशल के विकास के लिए।
- अपने अनुभव को प्रदर्शित करने के लिए।
- विद्यार्थियों को उचित वातावरण उपलब्ध कराने के लिए।
- विद्यालयी संसाधनों का उचित उपयोग करने के लिए।
- विद्यार्थियों के साथ समायोजन स्थापित करने के लिए।
- शिक्षण के माध्यम विषय वस्तु को रूचिकर बनाने के लिए।
- विद्यार्थियों में उचित भाषा विकास के लिए।
- विद्यार्थियों में सहभागिता को बढ़ाने के लिए।
- विषय–वस्तु को विद्यार्थियों के यथार्थ जीवन से जोड़ने के लिए।
- नवीनता से परिचित कराने के लिए।
- सरलता, सौम्यता और सहजता के अनुभूति के लिए।

सृजनात्मक शिक्षण की चुनौतियाँ : वर्तमान समय में विद्यालयी शिक्षा के लिए शिक्षण एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। समय के साथ–साथ तकनीकी प्रभाव का भी असर विद्यार्थियों में दिखाई देता है। विद्यार्थियों को परम्परागत शिक्षण के बजाय उन्हें उनकी आवश्यकता और रूचि के अनुकूल शिक्षण की कराने की जरूरत है। लेकिन किसी कक्षा–कक्ष की विविधता को देखते हुए शिक्षण कार्य को सहजता से पूरा करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। शिक्षण को रूचिकर बनाने के लिए सृजनात्मक शिक्षण कराना होगा जो कुछ परिस्थितियों में संभव हो सकता है लेकिन सभी परिस्थिति में अपनाना चुनौतीपूर्ण है।

चुनौतियाँ निम्नलिखित हो सकती हैः

- ❖ विद्यार्थियों के बीच सीखने की विभिन्न चुनौतियाँ को समझना।
- ❖ विद्यार्थियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि को समझना।
- ❖ विद्यार्थियों की स्वयं की प्रकृति को समझना।
- ❖ शिक्षण के दौरान प्रभावी संचार को समझना।
- ❖ सृजनात्मक शिक्षण के लिए धन के प्रभाव को समझना।
- ❖ सृजनात्मक शिक्षण के लिए समय की चुनौती।
- ❖ शिक्षण को समयानुसार उत्साहवर्धक और प्रेरक बनाये रखने की चुनौती।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

- ❖ सृजनात्मक शिक्षण में अनुशासन की चुनौती।
- ❖ अंतहीन कागजी कार्रवाई और विस्तारित कार्य घंटे की चुनौती।
- ❖ समय प्रबंधन।
- ❖ विद्यालय प्रबंधन और प्र ाासकों का दबाव।
- ❖ शिक्षक की जिम्मेदारी और जवाबदेही।

आज हर इंसान अपने को कुशल बनाने में अपने पूरी क्षमता का उपयोग कर रहा है। जैसा कि चाणक्य जी ने कहा है कि ''शिक्षक की गोद में विकास एवं विनाश दोनों ही पलते हैं।'' यह सर्वविदित है कि शिक्षक का अपना एक अनुठा एवं अद्वितीय स्थान है जिसकी गरिमा और महिमा का वर्णन नहीं करना पड़ता बल्कि यह अपने आप में मण्डित एवं प्रका ामान है।

निष्कर्षः

वर्तमान विद्यालयी शिक्षण प्रक्रिया में सृजनात्मक शिक्षण की नितान्त आवश्यकता है। विद्यार्थियों को उचित शिक्षा देना शिक्षक का दायित्व है। क्योंकि वह समाज में संचालित होने वाले ज्ञान एवं व्यवहार को विद्यार्थी के मन मस्तिष्क तक कुशलता से संचारित कर सकता है। शिक्षक को शिक्षण प्रक्रिया के दौरान ऐसा सौहार्दपूर्ण वातावरण तैयार करना चाहिए जिसमें विद्यार्थी अपने आपको सहज महसूस कर सके। विद्यार्थी अपनी क्षमतानुसार अपने आस–पास के वातावरण से सामंजस्य और समायोजन स्थापित करने के लिए तैयार हो सके। विद्यालयी अवस्था में विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, बौद्धिक, सामाजिक और नैतिक विकास ज्यादा पल्वित एवं विकसित होता है। अतः इस अवस्था में शिक्षण कार्य को रोचक प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे विद्यार्थी अपनी आवश्यकता और रूचियों के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया में भागिल हो सकें। शिक्षक को शिक्षण प्रक्रिया आरम्भ करने से पहले स्वयं की रणनीति योजनाबद्ध तरीके से करनी चाहिए। शिक्षक रणनीति बनाते समय विद्यार्थी के विभिन्न पक्षों और उसके विभिन्न पहलुओं का ध्यान रखकर शिक्षण प्रक्रिया को आरम्भ करना चाहिए। विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षण को सृजनात्मक बनाना चाहिए। सृजनात्मक शिक्षण से कक्षा–कक्ष में विद्यार्थियों को अपनी विविधता को समझने और उनकी क्षमता को निखारने का पर्याप्त अवसर मिलता सकता है। विद्यालय प्रबंधन और विद्यालयी समय–सारिणी से तालमेल बनाकर विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। ऐसा नहीं है कि यह आसान है बल्कि इस कार्य में चुनौतियाँ भी हैं, चुनौतियों का सामना भी सृजनात्मक ढंग से किया जा सकता है जिसमें विद्यार्थी भी अपने आपको शिक्षक के साथ–साथ निखार सकते हैं। दोनों लोग मिलकर सिखेंगे और उनमें चुनौतियों को समझने के साथ स्वयं सृजनात्मक चिंतन कर सकेंगे आगे जीवन में समाधान तक पहुँने में सक्षम बन सकेंगे।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संदर्भ सुची

लाल, आर. बी. (2013–14): दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्वान्त, मेरठः रस्तोगी पब्लीकेशन.
त्यागी , जी. (2012): शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार. आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन.
कुलश्रेष्ठ, एस.पी. एवं सिंघल, ए. (2013–14): भौक्षिक तकनीकी के मूल आधार. आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन.
मालवीय, आर. (2012): शैक्षिक तकनीकी एवं कम्प्यूटर सह–अनुदेशन, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन. .
पाण्डेय, के. पी. (2011): शिक्षण अधिगम तकनीकी. वाराणसीः विश्वविद्यालय प्रकाशन.
राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020): मानव संसाधन विकास मंत्रालय. भारत सरकार
https:www.carecheck.co.uk/10challenges-of-teaching.

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies